जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

–सफ़दर हाश्मी

दुनिया कैसे बनी? इस पूरे ब्रह्मांड में हमारा स्थान कहां है? आसमान में असंख्यों टिमटिमाते तारे क्या सूर्य हैं या ग्रह हैं? ऐसे प्रश्न हरेक बच्चे और इंसान के दिमाग में आते हैं। इस पुस्तक में सरल और गेय छंदों के ज़रिए विश्व की उत्पत्ति को समझाया गया है। इसमें एक ओर विज्ञान का ज्ञान है तो दूसरी ओर कविता का मनोरंजन है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये B-12 Price 15 Rupees

विश्व की कहानी

डा. एस. पी. खत्री

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

विश्व की कहानी : डा. एस.पी. खत्री

Vishva ki Kahani : Dr. S.P. Khatri

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन : मनोज पंडित
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

सातवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये
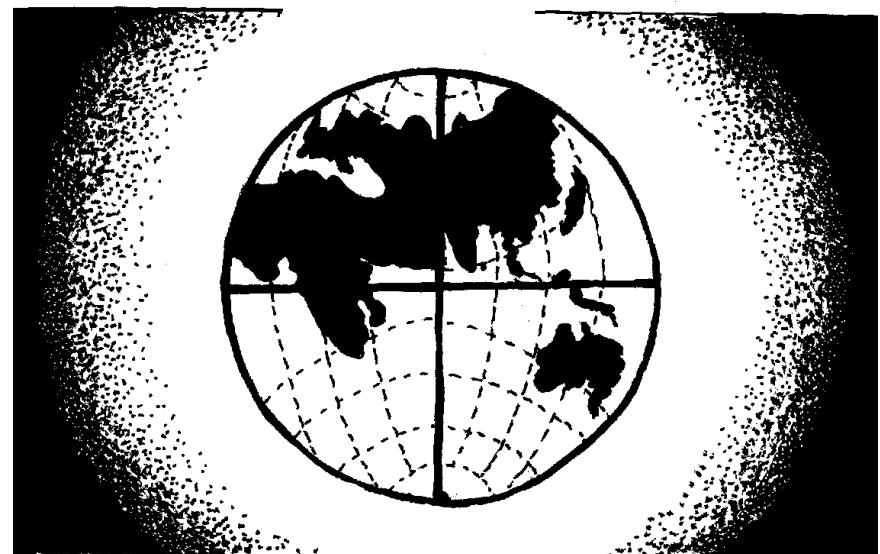
Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

विश्व की कहानी

डा. एस. पी. खत्री

विश्व की कहानी
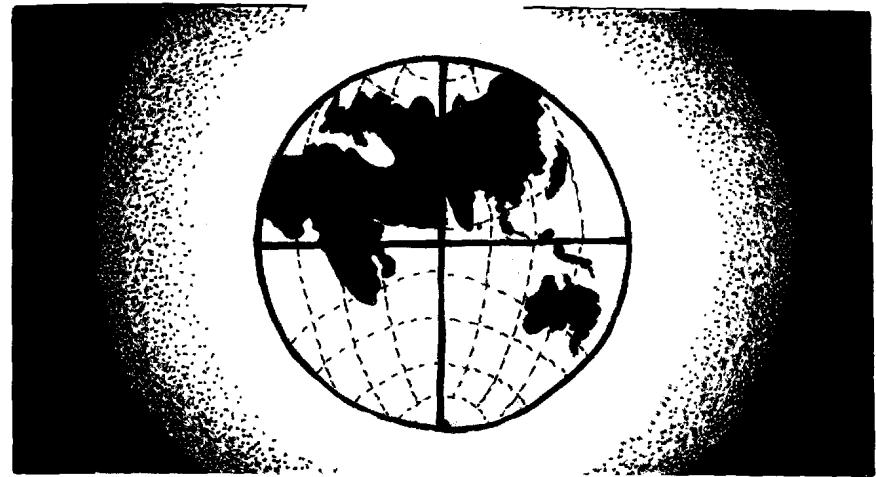
आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुंदर एक कहानी।
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।
जिस दुनिया में हम रहते हैं,
वह है बड़ी निराली,
कैसे बनी? बसी यह कैसे?
करे कौन रखवाली?

युग–युग बीते सदियां बीतीं,
वर्ष करोड़ों बीते।
फिर भी अब तक बना हुआ है,
जग, सब का मन जीते।
नहीं कहीं जंगल पहाड़ थे,
नदियां कहीं नहीं सागर।
नहीं कहीं थे महल–दुमहले,
कहीं नहीं नारी नर।

गंगा जमुना सिंधु नर्मदा,
ब्रम्हपुत्र कावेरी।
विंध्य हिमालय नीलगिरी की,
चोटी नहीं घनेरी,

चांद सप्तऋषि कहीं नहीं थे,
कहीं नहीं ध्रुवतारा।
कहीं नहीं तारों की माला,
सूना विश्व हमारा।
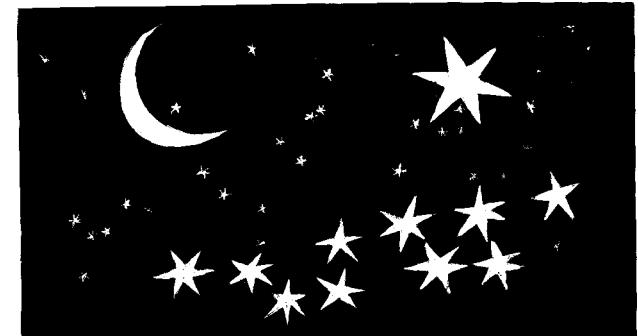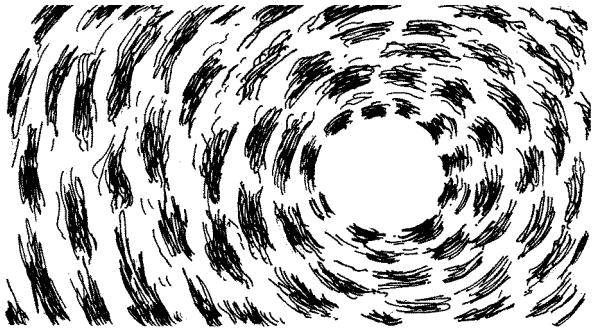
इस सूनेपन में फैला था,
गर्मी का विस्तार।
गर्मी बहुत गज़ब की थी,
जिसका आर न पार।

जैसे धुंआ उठे जंगल में,
जभी आग लग जाये।
सारे आसमान को छा ले,
इधर-उधर मंडलाये।

उसी तरह गर्मी की लहरें,
लाल! आग-सी लाल।
इधर-उधर मंडलाती जातीं,
चलें प्रलय की चाल।

सब कुछ पिघला-पिघला-सा था,
गर्मी थी घन घोर।
मानो लाखों सूरज मिलकर,
जलते हों हर ओर।
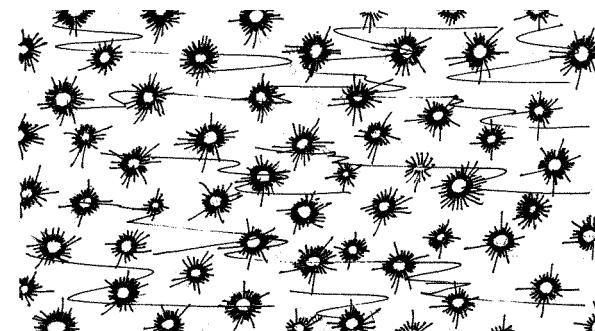
इस पिघली ज्वाला की लपटें,
फैली थीं हर ओर।
लाल-लाल लपटों की होली,
जिसका ओर न छोर ।

इन लपटों में छिपी शक्ति जो,
करती कौंध किल्लोल।
कहीं कड़कती, कहीं भड़कती,
अपनी बोली बोल।

गर्मी की लपटें करवट ले,
आपस में टकरातीं ।
जिनसे फूट आग के गोले,
फुलझड़ियां बन जातीं ।

इस गर्मी की धू-धू में से,
एक भाप-सा गोला।
टूटा, ठिठक गया अपने से,
बाहर भीतर पोला।
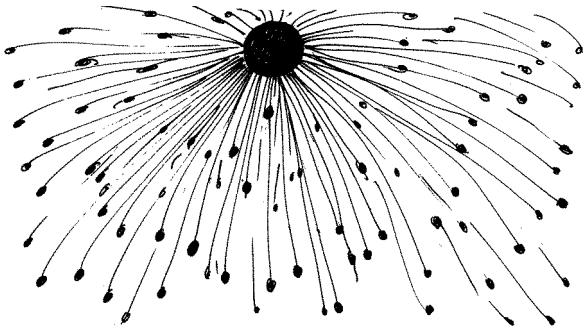
किसी गति से वह टूटा होगा,
इसको कौन गिनाए।
पल–पल में लाखों मीलों की,
दौड़ कौन समझाए।

ज्यों ही इस विशाल गोले ने,
नया ठिकाना पाया।
लाखों पिघली दीप–शिखाओं,
को उसने भरमाया।
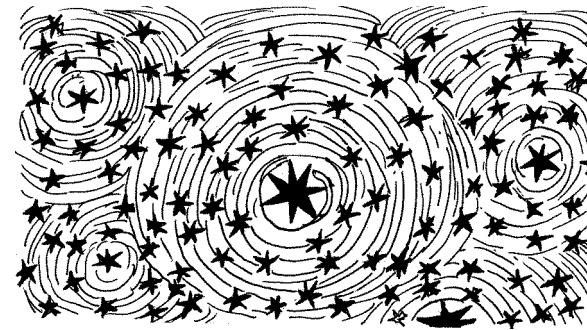
दीप–शिखायें चक्कर लेतीं,
शोलों को बिखरातीं ।
बिखर–बिखर कर ये फुलझड़ियां,
चक्कर स्वयं लगातीं।

इस विशाल गोले को हमने,
अपना सूर्य बनाया।
उसके ज्योतिपूर्ण जीवन से,
नव–ग्रहों की काया।
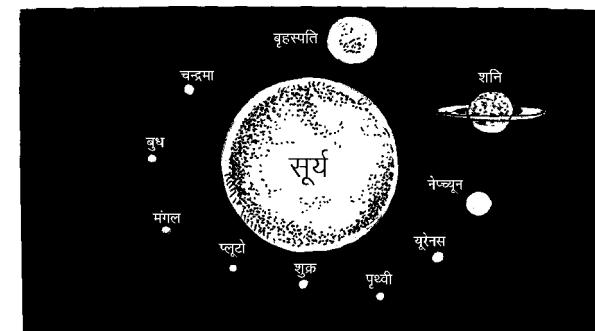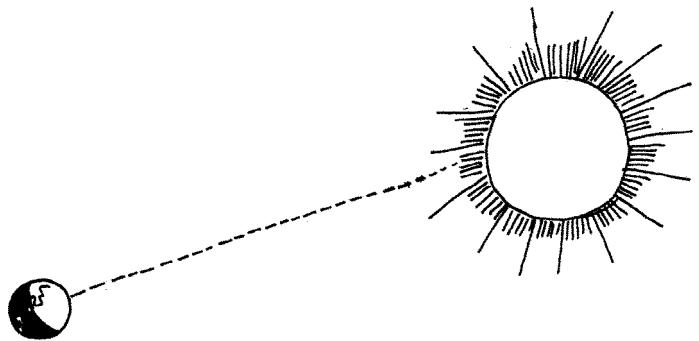
क्या है सूरज? कितना ऊंचा?
कितनी है गोलाई?
क्या उसकी गति? क्या है भीतर?
कितनी गर्मी छाई?

दस करोड़ मीलों की दूरी
पर सूरज रहता है।
कई लाख घन गर्मी अपने,
हिय में वह रखता है।
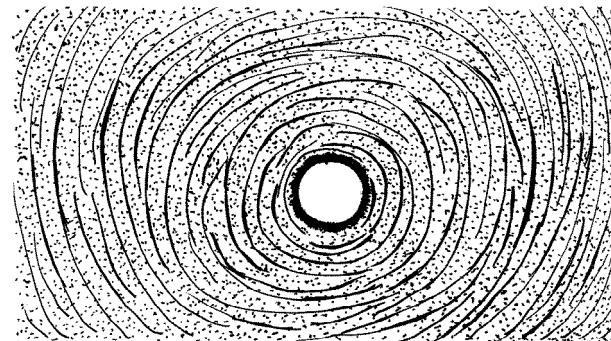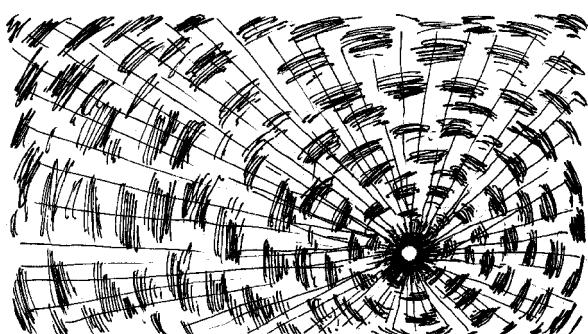
चक्कर लगा लगाने सूरज,
अपनी धुरी बनाये।
इस चक्कर में लगे टूटने,
कुछ हिस्से ठंडाये।

इन भागों ने टूट टूट कर,
अपनी धुरी बनाई।
यही नव-ग्रह कहलाते हैं,
गति विशेष है पाई।
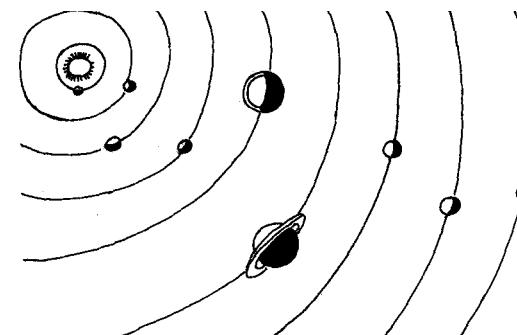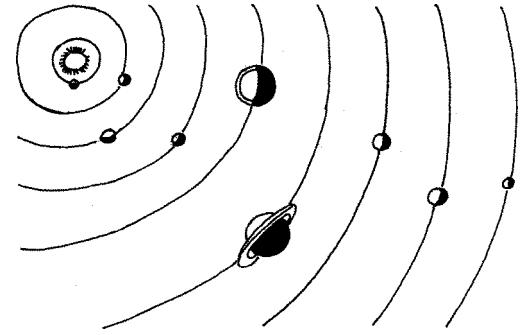
सभी घूमने लगे सूर्य के
ऐसा समा निराला।
सभी बंधे आकर्षण से थे,
ज्यों मोती की माला।

ये ग्रह दूर नहीं पृथ्वी से,
हमें दिखाई देते।
दूरबीन से साफ दिखेंगे,
इनको हम गिन लेते।
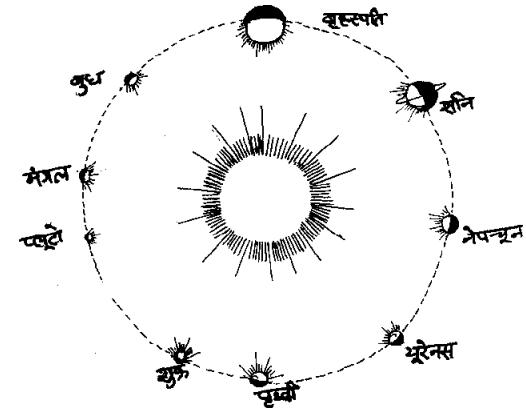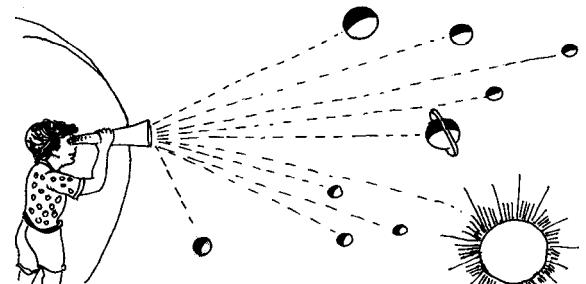
नवग्रहों में नहीं रोशनी,
सूर्य इन्हें चमकाता।
अपनी ज्योति इन्हें देता है,
जगमग इन्हें बनाता।

कहते इन्हें सूर्य–मंडल हम,
जो पृथ्वी के पास।
इसी सूर्य मंडल की गति से,
ज्योतिष करे विकास।
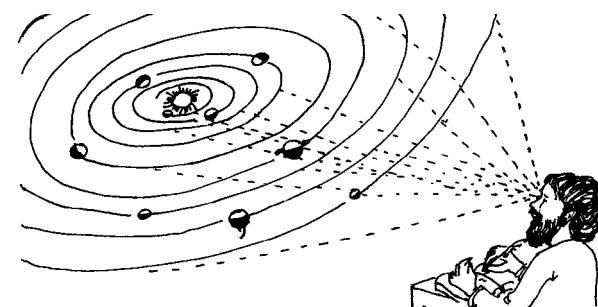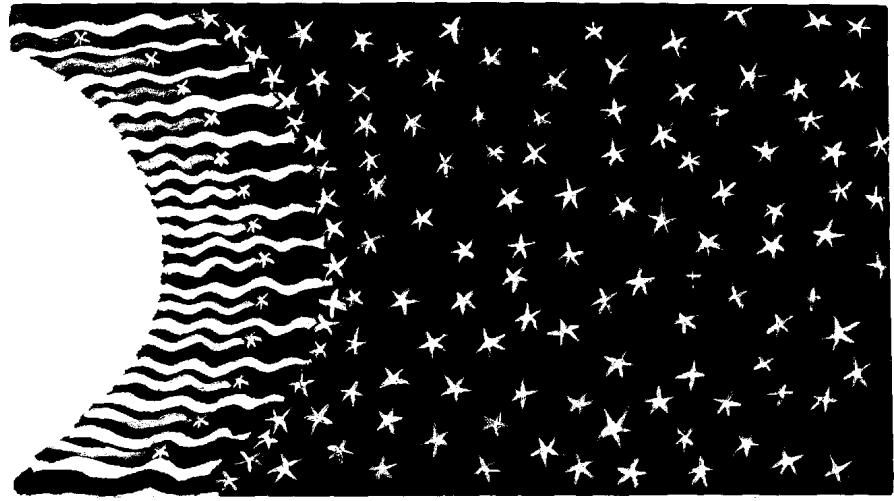
जैसे सूरज छिटक पड़ा था,
वैसे छिटके तारे।
इन तारों को कौन गिनेगा,
बने सूर्य ये सारे।

ये तारे जो हमें दिखाते,
अपनी ज्योति निराली।
लाखों गुना बड़े सूरज से,
नहीं ज्योति से खाली।

वे हैं इतनी दूर यहां से,
छोटे हमें दिखाते।
एक दूसरे से आकर्षित,
कभी न गिरने पाते।

सचमुच में नक्षत्र हमारे,
बने बहुत तारों से।
इसीलिए दिखलाई देते,
हैं कुछ आकारों से।
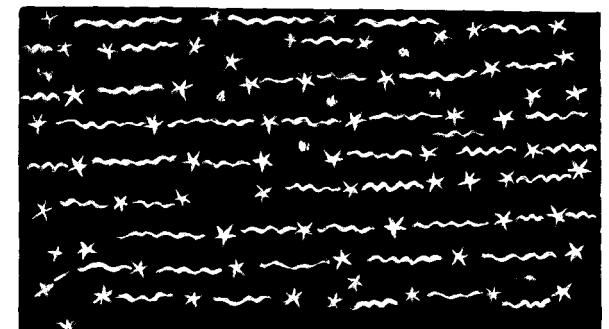
‘मीन’, ‘मेष’, ‘वृश्चिक’ सम हमको,
कुछ दिखलाई देते।
‘कुम्भ’, ‘सिंह’, ‘कन्या’ समान कुछ,
दूर दिखाई देते।

ये नक्षत्र घूमते रहते,
ध्रुव पर आंख लगाये।
समय–समय पर इधर–उधर ये,
अपनी ज्योति जगाये।
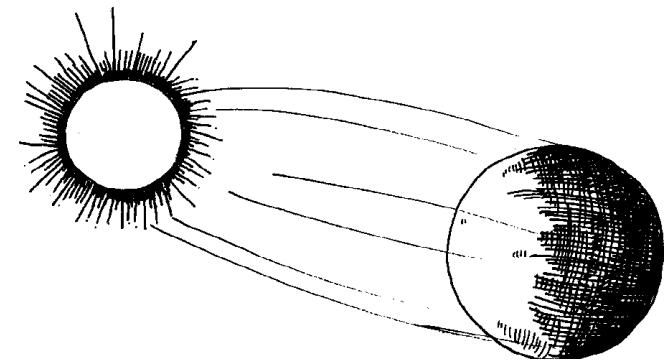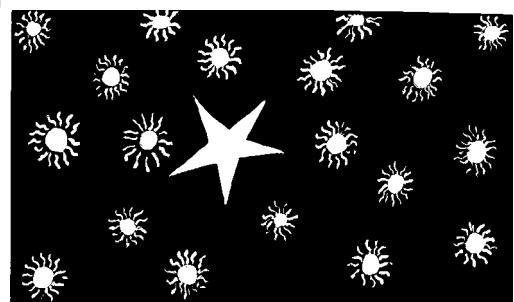
युग–युग बीते इसी सूर्य से,
छिटकी एक चिंगारी।
लगी काटने वह भी चक्कर,
पृथ्वी यही हमारी।

लगी लगाने पृथ्वी चक्कर,
डाल सूर्य का घेरा।
अपनी धुरी बना ली उसने,
लगी लगाने फेरा।
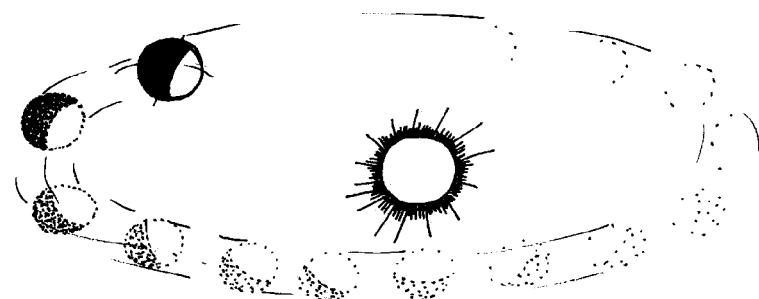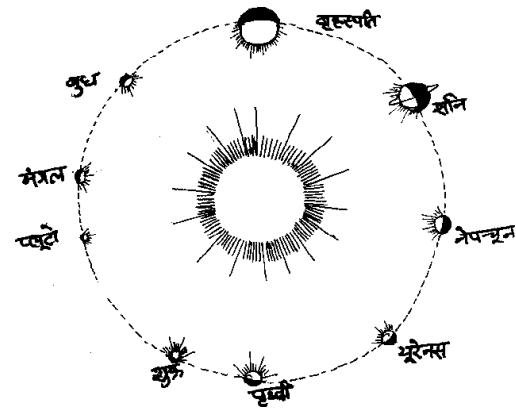
सवा तीन सौ चौंसठ दिन में,
पूरा चक्कर लगता।
इस चक्कर के पूरा होते,
एक साल था बनता।

अपनी धुरी घूम जब पृथ्वी,
चक्कर एक लगाती।
चौबिस घंटे पूरा करती,
दिन और रात बनाती।
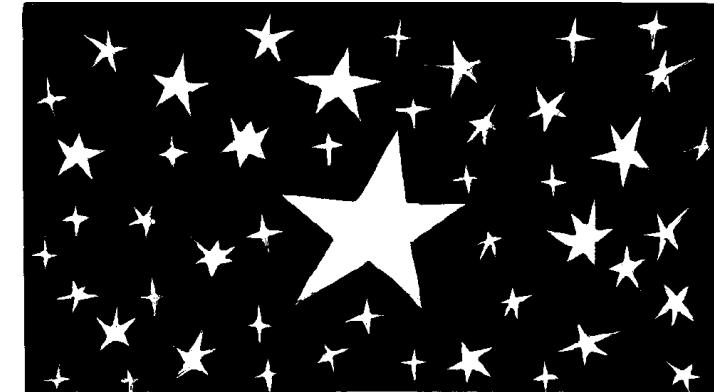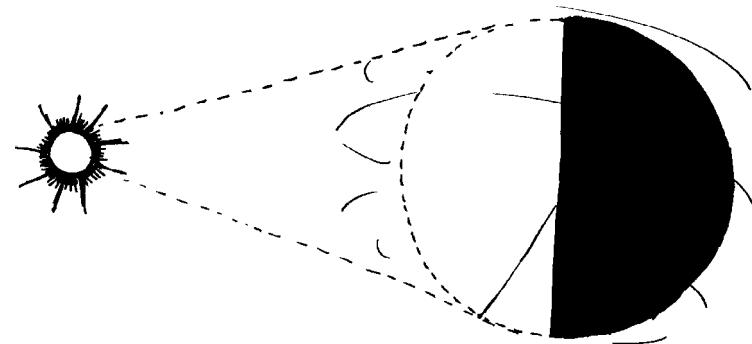
बीचों बीच रहे ध्रुव तारा,
नहीं लगाता फेरा।
इसके चारों ओर लगा है,
नक्षत्रों का डेरा।

फेरा लगा–लगा पृथ्वी ने,
टुकड़ा एक छिटकाया।
छिटक दूर वह लगा नाचने,
प्यारा चांद कहाया।
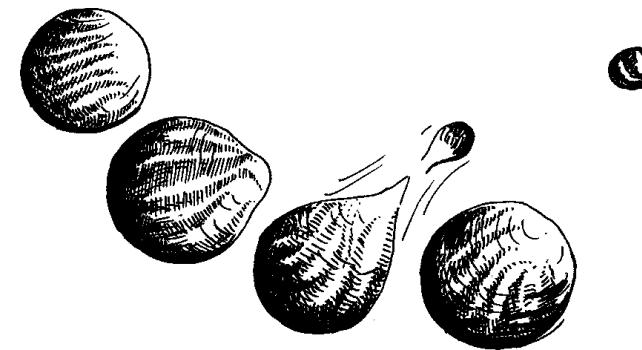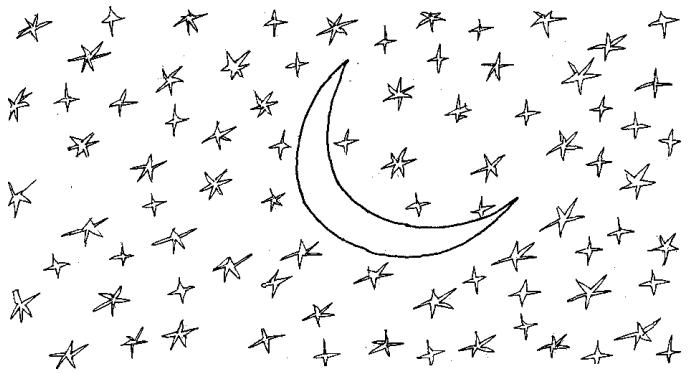
और चांद भी लगा नाचने,
पृथ्वी ही के साथ।
लगे नाचने हीरक तारे,
लिये हाथ में हाथ।

सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी और तारे,
एक शक्ति के हाथ।
होते हुए अलग औ न्यारे,
बंधे साथ ही साथ।
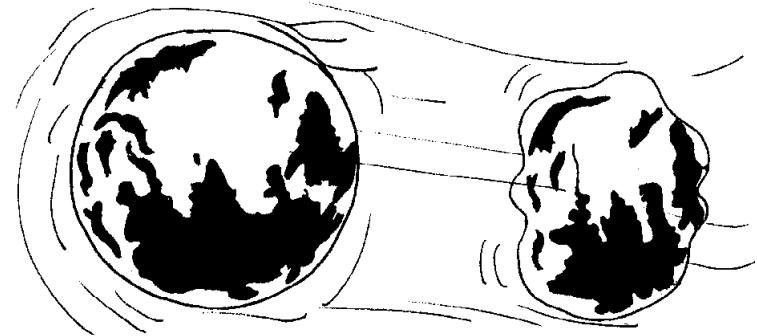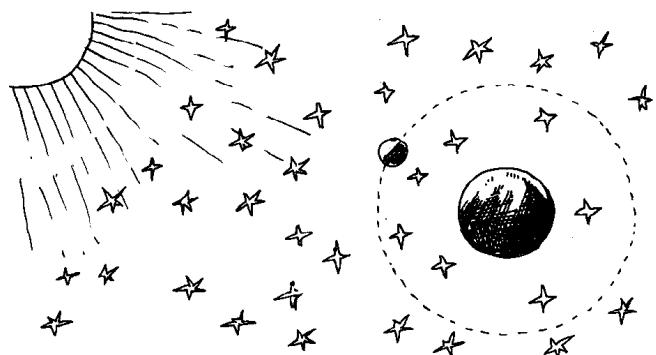
चक्कर लेते पृथ्वी ठंडी,
सिकुड़ी बनी कठोर।
गड्ढे टीलों को बनवाती,
होता कहीं न शोर।

जिन जगहों से चिप्पड़ टूटे,
सागर बने, पहाड़ ।
ज्वालामुखी कहीं पर फूटे,
इसी ठंड की आड़।
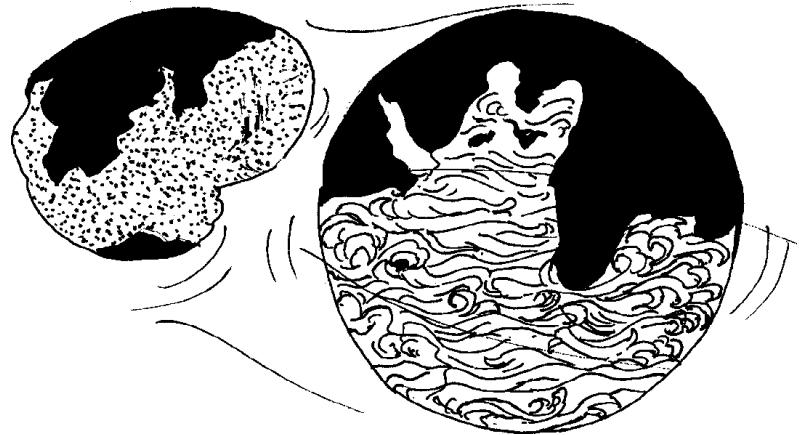
पृथ्वी की ठंडक सिकुड़न ने,
धीरे-धीरे जन्म दिया।
अंध प्रशांत हिंद से सागर,
सबने उससे जन्म लिया।

धीरे-धीरे गया निखरता,
नये विश्व का रूप।
सूरज चांद सितारे सागर,
नदी झील और कूप।
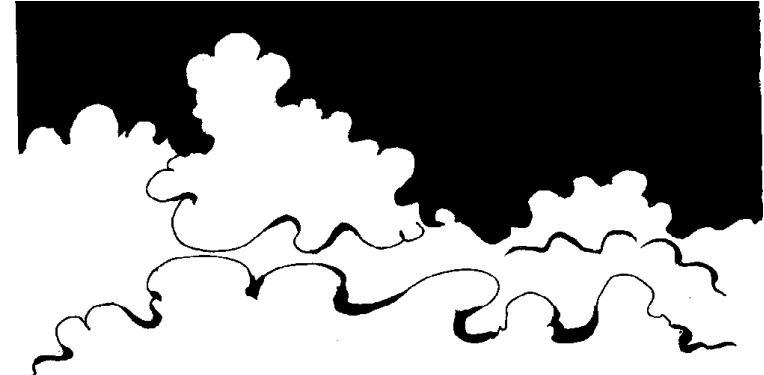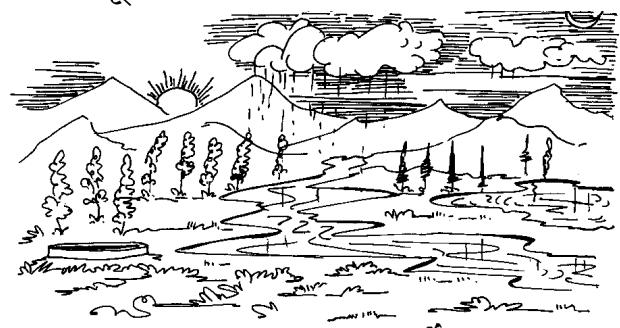
दूर जहां तक देख सके हम,
बना वहीं आकाश।
और हवा से घिरा हुआ जो,
जिसका नहीं विनाश।

आकर्षण की शक्ति क्यों है,
सूरज चांद सितारे।
जिनकी सुंदरता लखने से,
कभी नहीं मन हारे।
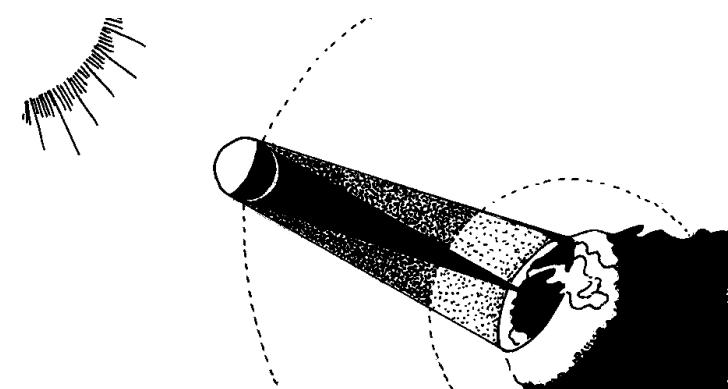
कैसे विश्व बना यह सारा?
सबको बड़ा अचंभा।
यूनानी कहते थे उसको,
रहे संभाले खंभा।

‘हरकुलीज’ के ‘बारह खंभे’,
इसको खड़े संभालें।
इसीलिए यह सधा हुआ है,
निश्चित इसकी चालें।
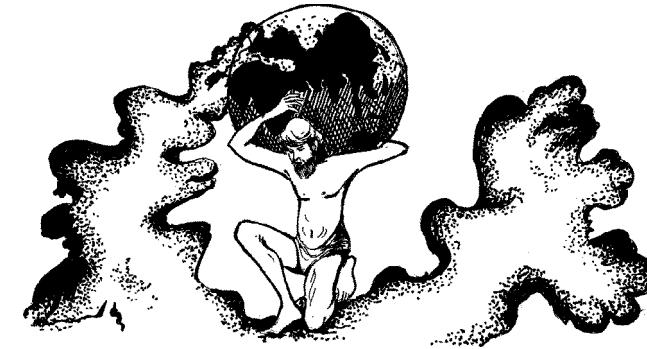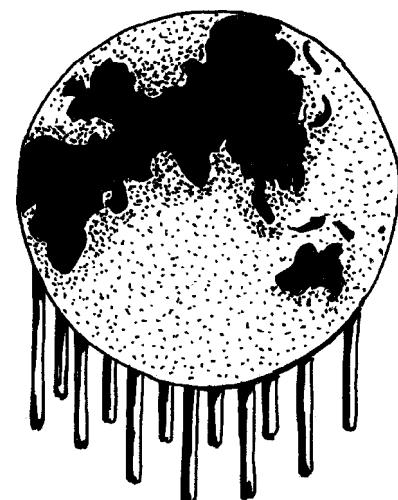
यूनानी यह भी कहते थे—
एटलस देव महान, !
कंधे पर पृथ्वी को साधे,
बैठे करते ध्यान।

कहते मुसलमान ईसाई,
प्रभु ने विश्व बनाया।
जल-थल, अम्बर, सबको उसने,
अपने हाथ सजाया।

भारत के पुराण कहते हैं,
शेष नाग रखवारे।
अपने फन पर इसे लिये हैं,
वही विश्व यह धारे।

पर विज्ञान यही बतलाता,
यही सही भी मानो।
आकर्षण की शक्ति निराली,
भैया! यह पहचानो।
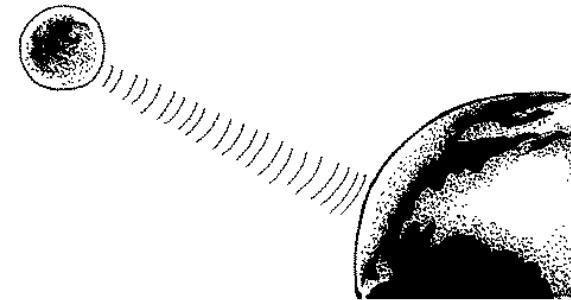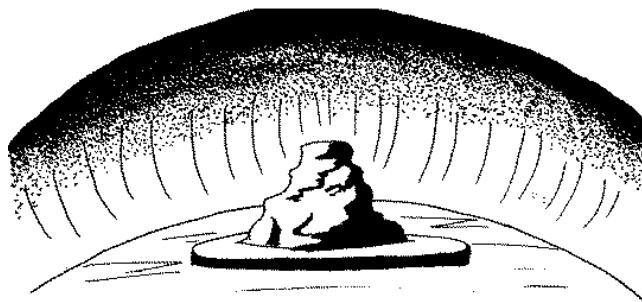
चुंबक की-सी एक शक्ति से,
बंधा विश्व है सारा।
वही शक्ति जीवन देती है,
इससे जीवन प्यारा।

इसी एक सिद्धांत सहारे,
विकसित विश्व हमारा।
इसी विश्व के हम प्राणी हैं,
विश्व हमारा न्यारा।

❒❒❒